सम्पादकीय

महाराजा रणजीत सिंह के पुर्नमूल्यांकन की जरूरत

महाराजा रणजीत सिंह को भारत के सक्रांन्ति काल का महानायक कहा जा सकता है । भारत वर्ष में अनेक दिशाओं से इस्लामी साम्प्रदायिक साम्राज्यवाद का विरोध करने के लिए जो ताकते उठी उनमें गुरू गोविन्द सिंह का नाम सहसा ध्यान में आता है गुरू गोविन्द सिंह जी ने विदेशी आक्रान्ताओं के लिए अध र्म साम्राज्यवाद का मुकाबला करने के लिए लगभग तीन शताब्दी पहले आन्नदपुर में एक अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासम्मेलन बुलाया था। इस महासम्मेलन में भाग लेने के लिए देश के कोने-कोने से लोग बैसाखी के पावन पर्व पर जुटे थे। इसी महा सम्मेलन में पॉच लोगों ने धर्म के लिए अपने प्राण उतसर्ग करने के लिए प्रस्तुत किये। उन्हीं पॉच महापुरूषों ने एक नयी सी कल्पना की जो बाद में खालसा के नाम से प्रसिद्ध हुई का जन्म दिया । महाराजा रणजीत सिंह कालांतर में इसी संकल्पना का प्रतिफल कहे जा सकते हैं । उन्होंने पश्चिमोत्तर भारत में एक ऐसे खालसा राज्य की स्थापना की जिसमें विदेशी इस्लामी सत्ता को नेस्तनाबुत की दिया । महाराजा रणजीत सिंह महमुद गजनवी के आक्रमणों का बदला लेने के लिए अफगानिस्तान में गजनी तक गये और वहॉ उन्होने भारत की विजय पताका लहराई । शिवाजी मराठा ने विद्यांचल के पास विदेशी इस्लामी सत्ता को चुनौती दी और एक नये स्वदेशी स्वराज्य का निर्माण किया महाराजा रणजीत सिंह ने शत्रु को उसी के घर में जाकर घेरा और उसके घुटने टिकवाये ।

महाराजा रणजीत सिंह का राज्य धर्म पर आधारित राज्य था धर्म पर आधारित राज्य का अर्थ है कि राजा अपने धर्म अथवा कर्तव्य का पालन करना या और किसी के साथ मजहबी आधार पर मतभेद नहीं करता था । रणजीत सिंह जिज्ञासू था। वह ज्ञान का पिपासू था । इसलिए उस सर्वशक्तिमान का साक्षात्कार करने के प्रयास में लगे हुए सूफी संतों को भी उसने उतना ही सम्मान दिया जितना आध्यात्मिक के पथ पर जा रहे दूसरे साधु संतों को महाराजा रणजीत सिंह ने अपने राज्य को खालसा राज्य कहा उसने इस राज्य के लिए अपने नाम का प्रयोग नहीं किया खलसा राज्य ही दरअसल धर्म राज्य है जिसमें राजा अपने कर्तव्य का पालन करता है, कर्मचारी अपने कर्तव्य का पालन करता है, न्यायधीश अपने कर्तव्य का पालन करता है और समाज अपने कर्तव्य का पालन करता है। इसे इतिहास का दुरुपयोग या इतिहास का दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि जब भारत ने लम्बे सर्घष काल के उपरान्त धीरे-धीरे विदेशी इस्लामी मुगल सत्ता को प्रास्त कर दिया था और स्वदेशी भारतीय शासन व्यवस्था धीरे-धीरे जड़े पकड़ रही थी तो भरत पर छलकपट से इग्लैंड ने शिंकजा कसना शुरु कर दिया महाराजा रणजीत सिंह कभी न कभी इसी विदेशी ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती देने का सपना देख रहे थे कि अचानक उनकी मृत्यु हो गई । उसके बाद का इतिहास अभी कल की घटना है। उसे कथा कहा जाये कि जो लोग अकबर को महान बना कर उसे कंधो पर उठाकर हॉप रहे हैं उन्हें महाराजा रणजीत सिंह का ध्यान नहीं आता। उन्हें महाराजा रणजीत सिंह के सुपुत्र दलीप सिंह को जलावतन करने की घटना ध्यान में नहीं आती। आज जरूरत है राष्ट्रीय परिप्रेक्ष महाराजा रणजीत सिंह कि शासन व्यवस्था का मूल्याकन करने की जरूरत है ।

आज जब भारत सरकार धर्म निरपेक्षता के नाम पर विकृत राज्य व्यवस्था को पुष्ट कर रही है और देश को विभिन्न जातियों गुटों और सम्प्रदायों में बांटने का प्रयास कर रही है। तो जरूरी है कि महाराजा रणजीत सिंह के खालसा राज्य अथवा धर्म राज्य से सबक लिया जाये । यहाँ राज्य अथवा धर्म राज्य को ही वास्तव में पंथ निरपेक्ष अथवा सेकूलर राज्य कहा जा सकता है । उसकी तर्ज पर भारत सरकार सही अर्थो में पंथ निरपेक्ष राज्य की और कदम बढ़ा सकती है । लेकिन दुर्भाग्य है कि भरत सरकार देश को पथों में तो बांट रही है और धर्म से निरपेक्ष रहने की घोषणा कर रही है। जो राज्य धर्म अथवा कर्तव्य से ही निरपेक्ष हो जायेगा वह सभी के साथ न्याय कैसे कर पायेगा । महाराजा रणजीत सिंह का राज्य इस अर्थो में आज भी प्रासंगिक है और भविष्य को दिशा देने के लिए सक्षम है ।

- डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री